वृथा कां निगमो रे

वृथा कां निगमो रे, पामी पदारथ चार।
उत्तम मानखो खंड भरथनों, सृष्ट कुली सिरदार।।

सेठें तमने सारी सनंधे, सोंप्यूं छे धन सार।
अनेक जवेर जतन करी, तमें लाव्या छो आणी वार।।

सत वोहोरीने सत ग्रहजो, राखजो रूडी प्रकार।
आणी भोमें रखे भूलतां, पछे सेठ तणो वेहेवार।।

आ भोम विस्मी सत माटे, वस्त आडी छे पाल।
अनेक रखोपा करी वस्तना, वीटया छे जमजाल।।

खरो खोजी हसे जाण जवेरी, ते जोसे ढ़ मन धीर।
वस्त अखंड ने तेहज लेसे, जे होसे वचिखिण वीर।।